The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 10 | October 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

संथाल हूल : भारत की प्रथम जनक्रांति

Dr. Prishila Soren

Ph.D., Political Science, Sido Kanhu Murmu University,

Dumka, Jharkhand, India

Email-sonasoren48@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17715496

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-10-2025

Published: 10-11-2025

Keywords:

संथाल, हूल, विद्रोह, जनक्रांति, जनजाति, ब्रिटिश, आदिवासी, परगना, महाजन, जमीनदार

ABSTRACT

21 वीं सदी में संथाल जनजातियों ने अपनी पहचान सम्पूर्ण विश्व में बना लिया है। अपने इस पहचान को बनाने के लिए उन्हें लम्बे संघर्षों के दौर से गुजरना पड़ा है। भारत में यह तीसरी बड़ी जनजाति के रूप में स्थान रखती है। संथाल जनजाती लोगों का मुख्य निवास स्थान झारखण्ड राज्य के संथाल परगना प्रमण्डल है। 30 जून 1855 के संथाल हूल का आगाज इस प्रमण्डल में स्थित बरहेट के भोगनाडीह नामक स्थान से हुआ था। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन की आवश्यकताओं ने जमीनदारों, महाजनों, सुदखोरों एवं व्यापारियों का नया वर्ग खड़ा कर दिया जिसे संथाल लोग ''दिकू'' कह कर संबोधित करते थे। इस वर्ग में शामिल लोग संथालों के शोषणकर्ता के रूप में उभरें। ब्रिटिश शासकों द्वारा स्थायी बन्दोवस्त की शुरूआत के साथ ही जमीन का स्वामित्व संथालों के हाथ से निकलकर जमीनदारों के हाथ में जाने लगा। जमीन का हस्तान्तरण एवं ऋणग्रस्ता ने संथालों को भू–स्वामी से बंधुआ मजदूर बना दिया। अंग्रजों की भ्रष्ट न्याय पद्धति और संथालों के बहु–बेटियों पर किये जा रहे यौन–अत्याचार ने विद्रोह के लिए विस्फोटक का काम किया। अंततः 30 जून 1855 को बरहेट के भोगनाडीह स्थित मैदान से सिदो–कान्हू, चाँद–भैरव द्वारा हूल का शंखनाद किया गया। यह विद्रोह लगभग नौ महीनों तक चला। इस विद्रोह में अनगिणत संथाल शहीद हुए, जिनके नाम का जिक्र इतिहास के पन्नों पर कहीं नहीं है। किन्तु इनकी शहादत बेकार नहीं गई। संथाल विद्रोह के उपरांत ही 22 दिसम्बर 1855 ई0 को संथाल परगना जिला का गठन किया

गया।

संथालों का ऐतिहासिक परिचय :–

संथाल जनजाति भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है। यह जनजाति मुख्य रूप से झारखण्ड राज्य के संथाल परगना प्रमण्डल के सभी जिलों में पाये जाते है। इनके अतिरिक्त उत्तरी छोटानागपुर प्रमण्डल के बोकारो, रामगढ़, धनबाद, गिरिडीह तथा हाजारीबाग जिला एवं कोल्हान प्रमण्डल के पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम तथा सरायकेला–खरसावाँ जिला में रहते है। भारत में संथाल जनजाति झारखण्ड राज्य के अतिरिक्त उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, बिहार तथा असम राज्य के साथ पड़ोसी देश नेपाल एवं बंग्लादेश में पायी जाती है।1

संथालों के उद्भव एवं विकास के संबंध में लिखित एवं प्रमाणित विवरण उपलब्ध नहीं है। इनसे संबंधित जानकारियाँ इनके लोकगीत एवं लोककथाओं के माध्यम से प्राप्त की जाती है। संथाली लोकगीत के अनुसार संथालों का जन्म ''हिहिड़ी पिपिड़ी'' अर्थात् भूमध्य सागर के सिसली द्वीप (इटली) में हुआ था। इसी जगह पर इनके पूर्वज पिलचू हाड़ाम और पिलचू बुड़ही रहते थे। इन दोनों की उत्पति 'हंस एवं हंसनी' के दो अंडे से हुई थी। इन्हीं दोनों ने मानव वंश की नींव डाली।2 पिलचू दम्पति के सात पुत्र एवं सात पुत्रियाँ थी। इनके विकास का आरम्भ खोजकमान अर्थात् कजाकिस्तान में हुआ। वंश का विस्तार हराराता अर्थात् हारेत या अफगानिस्तान में हुआ। जाति का विभाजन सासाड़बेडा अर्थात् लोहित सागर के कारण संथाल लोग कान्डहारी (अफगानिस्तान) चाय दिसोम (पाकिस्तान) एयाय नाई (सप्तसिन्धु) आदि क्षेत्रों में फैलने लगे। कालान्तर में ये लोग गाड़नाई (गंगा नदी) सुड़ानाई (सोन नदी), सांकनाई (शंख नदी), होते हुए सिर दिशोम सिकारदिगोम (गिरिडीह) चाय–चम्पा, बादोली–कोयंडा (हजारीबाग) में आए। संथालों का पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिला के सिलदा परगना सौंत अथवा सान्तप्रदेश में पदार्पण करना संथालों के इतिहास की युग परिवर्तनकारी घटना थी, क्योंकि इसी स्थान के नाम पर संथालों का नामकरण संताल, साँवताल तथा संथाल पड़ा।3

बेडेल का कहना है कि गंगा की ओर से दक्षिण पश्चिम के पहाड़ी क्षेत्रों की ओर संथालों का पलायन उत्तर से हो रहे आर्यों के आक्रमण के कारण जारी रहा। दत्ता और मजूमदार का भी मानना है कि छोटानागपुर की ओर चले गये।4 19 वीं शताब्दी के आरम्भ में संथाल छोटानागपुर हजारीबाग, पलामू और सिंहभूम में बस गये थे। इसी क्षेत्र से ये लोग संथाल परगना में आये थे। 1833 ई0 में ब्रिटिश सरकार ने संथालों के लिए राजमहल पहाड़ियों के परिपार्श्व के क्षेत्र, जिनके अन्तर्गत दुमका, गोड्डा, पाकुड़ तथा राजमहल शामिल है, को ''दामिन–ई–कोह'' परसियन भाषा से ली गयी है। जिसका अर्थ है पहाड़ का आँचल। इस क्षेत्र में पहाड़िया और संथाल जाति को छोड़कर अन्य जाति के प्रवेश एवं निवास पर प्रतिबंध लगाया गया। अंततोगत्वा संथाल हूल के उपरांत 22 दिसम्बर 1855 को संथाल परगना जिला का सृजन हुआ और संथाल लोग यहाँ स्थायी रूप से रहने लगे।

उद्देश्य :–

i. इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य संथाल हूल का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाना है।

ii. संथालों के ऐतिहासिक पृष्टभूमि पर संक्षिप्त प्रकाश डाला जाएगा।

iii. उन परिस्थितियों का अध्ययन किया जाएगा। जिन्होने संथाल आदिवासियों को दिकूओं के विरूद्ध करने पर बाध्य किया।

iv. औपनिवेशीकरण की इस विद्रोह में भूमिका का अध्ययन।

v. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के लिए जमीन तैयार करने में इस जनक्रांति की भूमिका का अवलोकन

संथाल हूल :– संथाल हूल जिसे संथाल विद्रोह या सिदो–कान्हू का विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। यह विद्रोह न सिर्फ झारखण्ड के इतिहास में होने वाले सभी जनजातीय विद्रोहों में सबसे व्यापक एवं प्रभावशाली माना जाता है बल्कि भारत के इतिहास में भी इसे प्रथम जनक्रांति के रूप में जाना जाता है। कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक नोट्स ऑन इंडियन हिस्ट्री में इसे भारत की प्रथम जनक्रांति कहा है। 1855 ई0 में जब देश के बाकी हिस्सों में स्वतंत्रता संग्राम की आहट भी नहीं थी तब संथाल परगना के जंगलों तथा गांवों में चुन्नु मुर्मू एवं सुन्नी हांसदा के घर में जन्में सिदो–कान्हू, चाँद–भैरव एंव फूलो–झानो के नेतृत्व में एक ललकार ''अबुआ देश, आबुआ राज तथा ''मरो या मारो'' अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ों का नारा गूंज उठा था। यही ललकार भारत के प्रथम जनजातीय विद्रोह संथाल हूल की पहचान बन गयी। संथाल परगना के क्षेत्र में रह रहे संथाल आदिवासियों को महाजनी शोषण, सरकारी भष्टाचार, प्रशासकीय उपेक्षा तथा पुलिसिया उत्पीड़न उन्हें हथियार उठाने के लिए बाध्य किया। दिकूओं के भ्रष्ट आचरण तथा साहूकारों की शोषक प्रवृति उनके लिए असहनीय था। नीलहे किसान अंग्रेजों की कोठियाँ सजा रहे थे और संथालों की झोपड़ियाँ उजड़ रही थी।

संथाल हूल के कारण :– ब्रिटिश शासन की आवश्यकताओं ने जमीनदारों, महाजनों तथा सूदखोरों के रूप में एक ऐसे वर्ग का सृजन किया जो आदिवासियों के बीच विदेशी शासन के पृष्ट पोषक तथा शोषणकर्ता के रूप में उभरे। स्थाई बन्दोवस्त की शुरूआत के साथ ही जमीन का स्वामित्व संथालों के हाथों से निकलकर जमीनदारों के हाथों में चला गया। डब्लू जे0 कल्शाँ ने आदिवासी अर्थव्यवस्था में जमीन एवं जंगल के महत्व पर जोर देते हुए स्वीकार किया है कि संथाल आदिवासियों के हाथों से जमीन का निकलना और इसमें ब्रिटिश शासकों का मौन समर्थन देना, विद्रोह का कारण बना। संथाल आदिवासियों के लिए जीने का सर्वाधिक शाक्तिशाली प्रेरक तत्व जमीन पर उनका स्वामित्व है। संथाल की जमीन न सिर्फ उसे आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है, बल्कि उनके संस्कृति को संजोये रखता है, तथा उसे पूर्वजों के साथ जुड़े रहने का एहसास भी दिलाती है।

यॉम्पसन और गैरेट ने अपनी किताब–''गईज एण्ड फुलफिलमेंट्स ऑफ ब्रिटिश रूल इन इण्डिया'' में संथाल विद्रोह के बारे में लिखते हुए इसमें ब्रिटिश शासन और उसके मध्यस्थों द्वारा किए गए आर्थिक शोषण की भूमिका को नकार दिया है। इसे आदिवासी क्षेत्र में हिन्दूओं के आगमन से उत्पन्न होने वाले दुष्प्रभावों का परिणाम बताया है।5 उनके अनुसार अपने हाथों से जमीन के निकलने, धूर्त एंव चतुर हिन्दु महाजनों के कर्ज के जाल में उलझने तथा कचहरियों में निचले तबके के लोगों के कारण न्याय न मिल पाने की वजह से सीधे सादे आदिवासियों ने सशस्त्र एवं हिंसक संघर्ष किया।

अंग्रेजों ने न सिर्फ संथालों के जल, जंगल, जमीन पर अधिकार जमाया बल्कि उनके सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पर भी हस्तक्षेप किया। 1793 के स्थायी बन्दोवस्त ने संथालों के माँझी परगना व्यवस्था को उजाड़ने का काम किया और गांव के माँझी को ग्राम प्रधान से साधारण कृषक में बदल दिया।

1832–1833 ई0 में सरकार ने राजमहल के पहाड़ी क्षेत्र को दामिन–ई–कोह नाम से सीमांकित कर दिया। तथा राजस्व और नागरिक मामलों की देखरेख के लिए इसे जेम्स पोण्टेन्ट के अधीन कर दिया गया। पोण्टेन्ट को इसमें सरकार के हितों की सुरक्षा तथा संथालों के साथ एक फायदेमंद भू–वन्दोवस्त करने और करों को एकत्रित करने की जिम्मेवारी सौंपी गयी थी। 6 ब्रिटिश भू–बन्दोवस्त भारी राजस्व की मांग और जनता के हितों के विपरीत न्यायिक व्यवस्था ने संथालों का अधिकाधिक शोषण किया एवं किसानों को भूमिहीन वर्ग में ला कर खड़ा कर दिया। अपने ही खून पसीने से तैयार कर गई खेतों तथा जमीनों के हक एवं अधिकारों से उन्हें बेदखल कर दिया गया। यह विद्रोह का सर्वप्रमुख कारण बना।

संथाल आदिवासियों के साथ प्रशासन के अधिकारियों द्वारा मानव जाति के साथ की जाने वाली निम्नतर व्यवहार और संथाल महिलाओं के साथ यौन–अत्याचार की धटना ने विस्फोटक का काम किया। यह जनजातीय मान–सम्मान एवं संस्कृति पर ऐसा प्रहार था जिसे संथाल सहन नहीं कर सकते थे। कई इतिहासकारों का मानना है कि नौ महीनें तक चले संथाल हूल के कई प्रमुख घटनाओं में फूलो–झानो ने महिलाओं को नेतृत्व प्रदान किया था। राजमहल क्षेत्र में रेल लाइन बिछाने वाले अंग्रेज अधिकारियों ने संथाल आदिवासी महिलाओं का यौन शोषण करना शुरू कर दिया। जिससे आक्रोशित होकर संथाल वीरांगनाएँ फूलो–झानों ने उनके ही शिविर में घुसकर कुल्हाड़ी से 21 अंग्रेज सैनिकों को मार गिराया था। उनकी वीरता के किस्से आज भी संथाली लोककथाओं ओर लोकगीतों में जीवित है। जैसे :–

फूलो–झानो–––––––– आवेन दो

तीरे तारवाड़े बेन साप केदा, आवेन दो

लाटू बोयहा खोन लाहारे

दाड़े बेन उदुक् केदा

अर्थात् फूलो–झानो तुम दोनों ने हाथ में तलवार उठाई, तुम दोनों ने बड़े भाइयों से पहले ही बहादुरी दिखाई।

संथाल हूल का परिणाम :– 1855–56 ई0 का संथाल विद्रोह एक महान आदिवासी विद्रोह था, जिसकी जड़े बदलती हुई परिस्थितियों में नीहित थी। यह आधुनिक भारत में नए प्रकार के कृषक संधर्ष की पहली शुरूआत थी। संथाल विद्रोह सही मायने में जनसाधारण का विद्रोह था। जो 50 हजार से अधिक संथाल योद्धाओं का अपने शोषणकर्ता के विरूद्ध सशस्त्र संघर्ष करने और इस जुझारू हिंसक संघर्ष में आधे से अधिक संथाल योद्धाओं के बलिदान का साक्षी है। इस संघर्ष में संथालों की एक ही मांग थी, उनके क्षेत्र में शांति और दमनकर्ताओं से मुक्ति। साम्राज्यवादी शासको ने इस मांग का जवाब क्रुरतापूर्ण दमन, कठोर सजाओं और फौजी दस्ते द्वारा संथाल गांवो की तबाही से दिया।

यद्यपि संथाल विद्रोह का दमन क्रुरतापूर्वक कर दिया गया, लेकिन इनकी मांग को दबाया नहीं जा सका। जल्द ही अपने भूमि संबंधित अधिकारों को रक्षा तथा शोषणकर्ताओं से मुक्ति की आवाज देश के दूसरे भागों के कृषक वर्ग की ओर से भी उठाई जाने लगी। संथाल विद्रोह एक महत्वपूर्ण मामले में काफी सफल रहा। और वह था संथाल परगना के नाम से पृथक जिला का गठन। इस तरह से संथाल आदिवासियों की अपनी पहचान को सरकारी मान्यता मिली। 30 जून 1855 को भोगनाडीह से संथालों ने जिस संघर्ष की शुरूआत की उसकी प्रतिध्वनि 1860 के नील विद्रोह, 1872 के पावना और बोगरा विद्रोह तथा 1875–76 के मराठा कृषकों के विद्रोह में सुनी जा सकती है। यद्यपि विद्रोह के नायक सिदो कान्हू, चाँद–भैरव, फूलो–झानो मारे गये। किन्तु इसकी गूंज वर्षो तक देश के दूसरे भाग के किसानों के बीच सुनाई देती रही। 20 वीं शताब्दी में आकर जमीनदारों और महाजनों से मुक्ति की मांग को राष्ट्रीय मांग के रूप में स्वीकार करते हुए देश के किसानों ने संगठित आवाज उठाई। साथ ही संथाल विद्रोह ने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार की कार्लमार्क्स ने संथाल विद्रोह के महत्व को बताते हुए अपनी पुस्तक ''नोटस ऑन इण्डियन हिस्ट्री'' में लिखा है–यह विद्रोह सात महीनों तक लगातार चलने वाले गुरिल्ला युद्ध के बाद ही दबाया जा सका।7 महान कवि रविन्द्रनाथ टैगोर ने भी इस विद्रोह के नायकों को अपनी श्रद्धांजली दी। यद्यपि औपनिनवेशिक शासन ने संथाल विद्रोह का दमन कर दिया, लेकिन आज भी हजारों संथालों के लिए यह एक प्रेरणा है, जिसे उन्होंने अपनी परम्पराओं में जीवित रखा है।

निष्कर्ष :– इस शोध पत्र के माध्यम से कहा जा सकता है कि 1855 ई0 का संथाल हूल विस्तृत एंव व्यापक क्षेत्र में किया गया जनक्रांति था। जिसमें संथालों ने अपने जान की आहूति देकर अपने जल, जंगल और जमीन संबंधी हक एवं अधिकार को वापस पा लिया। यद्यपि इस जनक्रांति के द्वारा महाजनी व्यवस्था, जमीनदारी व्यवस्था सूदखोरी व्यवस्था तथा अंग्रेजों के शोषक नीति को भले ही जड़ से मिटाया नहीं जा सका लेकिन भारतीयों को अपने हक एवं अधिकार के प्रति जागरूक अवश्य किया। 1857 के सिपाही विद्रोह के लिए जमीन तैयार करने का काम भी संथाल विद्रोह ने किया संथाल हूल से प्रेरणा लेकर ही आदरणीय दिवंगत दिशोम गुरू शिबू सोरेन ने अलग झाखण्ड बनाने

के लिए लम्बा संघर्ष किया। उनको इस आन्दोलन में सफलता भी मिली। परिणामतः भारत के मानचित्र पर झारखण्ड 15 नवम्बर 2000 को 28 वां राज्य के रूप में बना। अतः कहा जा सकता है कि संथाल आदिवासियों के रक्त में अपने हक एंव अधिकार के लिए संघर्ष करने की प्रवृति विद्यमान रहती है।

संदर्भ सूची :–

1. कुमार, डॉ0 विनय ''संथाली भाषा लोकगीत एवं नृत्य'' Jharkhand Jharokha, Shop No.DG.03, New Building New Market, Ratu Road Ranchi, Jharkhand, Pin No-834001, 2014, Page No-57
2. टुडू, डॉ0 कृष्ण चन्द्र, ''संथाली साहित्य के उद्भव और विकास'' प्रो0 कृष्ण कुटीर, राजदोहा, पूर्वी सिंहभूम राँची, झारखण्ड, 2020, पेज नं0–02
3- पासवान, डॉ0 बिजेन्द्र, ''अंग्रेजी राज में संथालों के संघर्ष का इतिहास'' Janaki Prakashan, Publishers & Distributors, Ashok Raj Path Chauhatta, Patna-800004 (Bihar) 2009, Page No-01
4. वही Page No-04
5- सिंह, डॉ0 बंदना ''संथाल विद्रोह'' Janaki Prakashan, Publishers & Distributors, Ashok Raj Path, Chauhatta Patna-800004 (Bihar) 2009, Page No-01
6. वही, पेज नं0–65
7. वही, पेज नं0–06